जनपद अमरोहा की तहसीलों धनौरा एवं हसनपुर के आर्थिक विकास में संसाधनों का योगदान

डॉ० अनिल कुमार

अब्दुल रज्ज़ाक (पी0जी0) कॉलेज अमरोहा रोड, जोया।

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र जनपद अमरोहा की धनौरा एवं हसनपुर तहसीलों का संयुक्त क्षेत्र है। जनपद अमरोहा में सम्मिलित धनौरा तहसील का अक्षांशीय विस्तार 28°, 47′ उत्ती अक्षांश से 29°, 5′ उत्तरी अक्षांश तथा देशान्तरीय विस्तार 780, 2′ पूर्वी देशांतर से 78°, 20′ पूर्वी देशान्तर है। धनौरा तहसील का भौगोलिक क्षेत्रफल 717.47 वर्ग कि० मी० है। जबकि तहसील हसनपुर का अंक्षाशीय विस्तार 27°, 47′ उत्तरी अक्षांश से 28°, 6′ उत्तरी अक्षांश तथा देशान्तरीय विस्तार 78°, 3′ पूर्वी देशान्तर से 78°, 30′ पूर्वी देशान्तर तक विस्तृत है। हसनपुर तहसील का सकल भौगोलिक क्षेत्रफल 843.12 वर्ग कि० मी० है।

मानवीय सभ्यता का उदय एवं विकास संसाधनों की उपलब्धता का ही प्रतिफल है। प्राचीन समय से लेकर आज तक का सामाजिक एवं आर्थिक विकास संसाधनों की पर्याप्तता पर ही निर्भर करता है। संसाधन मानव के विकास एवं सुख समृद्धि का महत्वपूर्ण आधार है। जनपद अमरोहा की धनौरा एवं हसनपुर तहसीलों में विकास सम्बन्धी योजनाओं का क्रियान्वित कर संसाधनों के समुचित उपयोग हेतु योजनाबद्ध किये जाने की आवश्यकता है। जिससे एक ओर संसाधनों का संरक्षण होगा तथा आर्थिक विकास में भी तीव्रता आयेगी।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है:

डॉ० अनिल कुमार

जनपद अमरोहा की तहसीलों धनौरा एवं हसनपुर के आर्थिक विकास में संसाधनों का योगदान

शोध मंथन, मार्च 2018,
पेज सं0 92–96

Article No. 14
http://anubooks.com
?page_id=581

प्रस्तावना

भूगोल की प्रमुख शाखाओं भौतिक भूगोल और मानव भूगोल का किसी भी क्षेत्र के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है। इसी के साथ आर्थिक भूगोल के साथ संसाधन भूगोल का घनिष्ठ सम्बन्ध हमेशा से रहा है। यह संसाधन भूगोल आर्थिक भूगोल की महत्वपूर्ण शाखा है जो मानव के कार्यों द्वारा उत्पन्न भूदृश्यों की व्याख्या से सम्बन्धित है। संसाधनों का विकास किसी भी क्षेत्र के आर्थिक और सामाजिक स्तर पर निर्भर करता है। आर्थिक विकास में संसाधनों का हमेशा महत्वपूर्ण योगदान रहा है। संसाधनों का उपयोग ही किसी स्थान के विकास आर्थिक क्रियाकलापों और सामाजिक आर्थिक संरचना को दर्शाता है। भूगोल विषय जो एक व्यापक विज्ञान है, जिससे हम धरातल पर प्राकृतिक व मानवीय तत्वों का अध्ययन करते हैं। इससे माननीय तथा सांस्कृतिक भूदृश्यों की उत्पत्ति होती है। संसाधन शब्द अपने आप में बहुत व्यापकता लिये हुए है, यही संसाधन ही किसी क्षेत्र विशेष के आर्थिक विकास की क्रियाओं का आधार बनते हैं। इसके अन्तर्गत मानव का सम्पूर्ण संचित ज्ञान एवं उसकी तकनीकी क्षमता भी सम्मिलित है। किसी भी प्रदेश में संसाधनों का आधार जितना अधिक और व्यापक होता है, आर्थिक विकास का स्तर उतना ही ऊँचा होगा। संसाधनों व आर्थिक विकास की भूमिका को अच्छी प्रकार समझा जा सकता है।

अधिकांश संसाधनों को ठोस गोचर पदार्थों जैसे – खनिज, जल, मिट्टी आदि के रूप में ही ठीक प्रकार से समझा जाता है। ये सभी पदार्थ संसाधन हो सकते है,परन्तु संसाधनों का इससे भी अधिक व्यापक रूप है। क्योंकि भूगोल एक ऐसा विषय है, जो मानव कल्याण की विचारधारा को अपने अध्ययन के केन्द्रीय बिन्दु में समाहित किये हुए है। इसलिये विभिन्न प्रकार की उन मानव उपयोगी वस्तुओं को संसाधन कहाँ जाता है, जो उसके आर्थिक विकास व माननीय विकास में सहयोग करती है। भूगोलवेत्ता एवं नियोजनकर्ताओं की दृष्टि में संसाधन ऐसे प्राकृतिक पदार्थ है, जो मानव के लिये आर्थिक दृष्टि से उपयोगी हैं।

वर्तमान में धनौरा एवं हसनपुर तहसीलों के सदर्भ में संसाधनों का आर्थिक विकास में योगदान करने का यह शोध का प्रयास है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य जनपद अमरोहा की तहसीलों धनौरा एवं हसनपुर के आर्थिक विकास में संसाधनों का योगदान व आर्थिक विकास में संसाधनों के महत्व और इसकी व्यापकत्ता को शोधार्थी प्रस्तावित शोध पत्र में निम्न उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए करेगा।

- अध्ययन क्षेत्र की भौगोलिक पृष्ठभूमि की व्याख्या करना।
- आर्थिक विकास में संसाधनों के धनिष्ठ सम्बधों की व्याख्या करना।
- अध्ययन क्षेत्र में उपलब्ध संसाधनों और आर्थिक क्रियाकलापों का वर्तमान जनसंख्या अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक आर्थिक सुविधाओं का मूल्याकंन करना।
- उपलब्ध संरचनात्मक एवं सामाजिक आार्थिक सुविधाओं का मूल्याकंन करना।
- अध्ययन में माननीय संसाधनों एवं आर्थिक विकास की क्रियाओं के अर्न्तसम्बन्धों की व्याख्या करना।

अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र जनपद अमरोहा में दो तहसील हसनपुर एवं धनौरा हैं, जिसके चार विकास खण्ड हसनपुर गंगेश्वरी, धनौरा और गजरौला है। जिला अमरोहा में वर्ष 2011 के अनुसार कुल जनसंख्या – 18,40221 व्यक्ति तथा इसका कुल क्षेत्रफल 2160.51 वर्ग किलोमीटर है।

जनपद अमरोहा में धनौरा तहसील 1989 में बनी है। जो गंगा नदी के किनारे स्थित है। जिसका अक्षांशीय विस्तार 280 47′ उत्तरी अक्षाश से 29º 5′ उत्तरी अक्षांश तथा देशान्तरीय विस्तार 78º 2′ पूर्वी देशान्तर से 78º 20′ पूर्व देशान्तर तक विस्तृत है। यह धनौरा तहसील का मुख्यालय एवं एक छोटा कस्बा है।

अमरोहा जिले में अंकित हसनपुर तहसील का क्षेत्रीय विस्तार 843.12 वर्ग किलोमीटर है। इसका अक्षाशीय विस्तार 27º 47′ उत्तरी अक्षाश से 28º 6′ उत्तरी अक्षांश तथा देशान्तरीय विस्तार 78º 3′ पूर्वी देशान्तर से 78º 30′ पूर्वी देशान्तर तक है।

इन तहसीलों का धरातल समतल है। इनके धरातल में दोमट, बुलई मिट्टी, तराई एवं रेतीली मिट्टियां पायी जाती है। तहसीलों की जलवायु मानसूनी है। ग्रीष्मक्षतिु में अधिक गर्म व शीतक्षतिु में अप्रिाक ठण्डी व शुष्क है, इसे उपार्द्र जलवायु भी कहा जाता है। यहाँ की वर्षा औसत लगभग 105 से 110 सेमी0 तक है।

वर्तमान समय में सभी संसाधन व आर्थिक विकास एक दूसरे पर अश्रित है। आज बहुउद्देश्य लाभ का समय है ताकि सभी के विकास का अधिकतम लाभ दिया जा सके। बदलती हुई तकनीकियों का उपयोग करते हुए परस्पर कार्य करते हुए तहसील धनौरा तहसील हसनपुर के संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग किया जा सकता हैः–

- तहसील हसनपुर और तहसील धनौरा के संसाधनों के अधिक से अधिक बेहतरीन उपयोग से ही यहाँ के आर्थिक विकास को तीव्र गति दी जा सकती है।
- किसी भी क्षेत्र का विकास संसाधनों के उपयोग में लायी जाने वाली नवीन तकनीकी और वहाँ के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक और शैक्षिक विकास के आधार पर होता है। इसलिये यहाँ एक सन्तुलित विकास आवश्यक है, जिसका नवीन तकनीकी क्षमता, समसमायिक विकास के साथ अन्यों की तुलना में संसाधनों की मात्रा का उपयोग आर्थिक विकास के लिये किया जा सके।
- संसाधनों के समग्र उपयोग से आर्थिक विकास को गति दी जा सकती है।
- संसाधनों के सर्वोत्तम उपयोग के लिये समग्रता सन्तुलित वैज्ञानिक सोच, नवीन तकनीकी व जागरूकता आवश्यक है।
- वर्तमान समय में पर्यावरण प्रदूषण सबसे बड़ा खतरा है जो विकास के नाम पर हो रहा है, को रोका जा सकेगा। इससे भूमि की उर्वरता, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण प्रभावित हो रहा है।

जनपद अमरोहा अध्ययन क्षेत्र की दोनों तहसीलों धनौरा एवं हसनपुर के आर्थिक विकास में सहायक संसाधन

जनसंख्या

किसी भी क्षेत्र की जनसंख्या उसकी सबसे बड़ी एवं बहुमूल्य पूंजी होती है जो अपने उपयुक्त आकार तथा क्षमतानुसार मानव शक्ति को जन्म देती है। मानव शक्ति किसी राष्ट्र के समग्र व बहुमुखी

विकास के लिये एक आवश्यक तत्व है। प्रागैतिहासिक काल में मानव जनसंख्या का अध्ययन अत्यन्त धीमी गति से था परन्तु विकास में तीव्रता के साथ–साथ जनसंख्या के अध्ययन में भी तीव्रता आयी। चूंकि जनसंख्या ही किसी प्रदेश अथवा क्षेत्र की वास्तविक परिसम्पत्ति होती है। अतः वहां का आर्थिक जीवन, क्षेत्रीय विकास तथा कल्याण बहुत बड़ी सीमा तक जनसंख्या के आकार एवं गुण कोटि पर निर्भर करता है इसके अतिरिक्त देश का आर्थिक और सामाजिक विकास करने हेतु जो विविध योजनायें बनायी जाती हैं वे सभी जनसंख्या को ध्यान में रखकर ही बनायी जाती हैं क्योंकि इसके द्वारा किसी क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण को समझने में मदद मिलती है।

कृषि विकास के लिये किये जाने वाले कार्य

- नवीन नहरों का निर्माण किया जाये।
- नलकूपों का निर्माण करने में सरकारी सहयोग होना चाहिये।
- जल संरक्षक के लिये लोगों को जागरूक किया जाये और का कार्य भी किया जाये।
- खेंतो को सिंचित करने के लिये सामूहिक पम्पसेट लगाये जाये।
- किसानों को खेती करने के नवीन तकनीक का प्रशिक्षण दिया जाये। आधुनिक दंग से खेती कर किसान अधिक से अधिक आर्थिक लाभ कमा सके।
- खेती की बुआई व सिंचाई के लिये सरकारी की और से शून्य प्रतिशत ब्याज पर क्षृण उपलब्ध कराया जाये।
- बंजर एवं परती भूमि को कृषि योग्य बनाना चाहिए।
- उन्नत किस्मों के बीजों को खेती के लिये इस्तेमाल किया जाये।

परिवहन एवं संचार के संसाधनों का आर्थिक विकास में उपयोग

- प्रदूषण रहित वाहनों का उपयोग क्षेत्र में अधिक से अधिक कराया जाये।
- क्षेत्र की प्रत्येक सड़क व मार्गो को मजबूत व टिकाऊ बनाया जाये ।
- सड़क मार्गों व रेल मार्गों और जल मार्गों आदि की विशेष व्यवस्था क्षेत्र के उचित स्थान पर स्थापित हो। समय–समय पर मार्गों की मरम्मत कराई जाये।
- प्रत्येक सड़क मार्ग, जलमार्ग, रेलमार्ग व वायुमार्ग आदि के किनारे–किनारे पेड़–पौधे लगाये जाये।
- सार्वजनिक भूमि क्षेत्र पर अधिक से अधिक वृक्ष लगाये जाये। ताकि क्षेत्र विकास के साथ–साथ प्रदूषण रहित हो।
- गावों की सड़कों को जिला मुख्यालय व देश व प्रदेश की राजधानियों से भी जोड़ा जाये।

गरीबों व बेरोजगारी पर ध्यान दिया जाये

- जो व्यक्ति वास्तविक रूप से गरीबी झेल रहा हो तो उसे सरकारी योजनाओं में प्राथमिकता दी जाये।
- गरीबों को शिक्षा रोजगार, क्षृण आवास आदि में छूट दी जाये।
- गरीब बेघर व्यक्तियों के लिये छोटे–छोटे सुविधाजनक घरों की सरकार की तरफ से व्यवस्था की जाये।

शिक्षा, रोजगार, स्वच्छ वातावरण

- प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों की प्रशिक्षित शिक्षिकों के साथ – साथ रख रखाव की व्यवस्था की जाये।
- कला मनोरंजन एवं खेलकूल के स्थलों की स्थापना के साथ उन्हें सुरक्षित भी रखा जाये।
- उच्च कोटि के पुस्ताकालयों की व्यवस्था की जाये और प्रौढ शिक्षा को भी बढावा दिया जाये।
- लधु एवं कुटीर उद्योगों के लिए आर्थिक सहायता उपलब्ध करायी जाये और अनुदान भी दिया जाये।
- सामूहिक जानकारी एवं प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से कार्मिकों को जानकारी एवं प्रशिक्षण दिया जाये।
- तकनीकी प्रशिक्षण देकर बेरोजगारौ युवकों को तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान कर श्रमशक्ति का विकास करना।
- डेयरी फार्म, मुर्गी पालन, मधुमक्खी पालन और पशुपालन आदि व्यवसायों को बढ़ावा देना।
- महामारी और रोगों की रोकथाम के लिए उचित चिकित्सा व्यवस्था।
- स्वच्छ जल की उपलब्धता, सार्वजनिक एवं निजी शौचालयों के निर्माण के लिए अनुदान व सरकारी सहायता प्राप्त हो। जिससे पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम हो सके।

आर्थिक विकास एक निरन्तर चलने वाली प्रकिया है। इसका तात्पर्य यह बिल्कुल नहीं है कि हम आर्थिक विकास के नाम पर उपलब्ध संसाधनों को तेजी से हानि पहुँचाये। बल्कि हम संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग कर उनसे अधिक से अधिक लाभ कमायें।

सन्दर्भ

1. डारकेन्ट, डी0एफ0 **1993** Growth प्लस एंड ग्रोथ सेन्टर इन रीजनल प्लानिंग एनवायरमेन्ट एंड प्लानिंग।
2. Sas Gupta: Economic Geography of India at Delhi **1969.**
3. जिम्मरमैनः World Resources and Industries **1972.**
4. J.Singh संसाधन भूगोल, गोरखपुर **1978**
5. Williams: Economic Geography **1984.**
6. सिंह, बृजभूषणः कृषि भूगोल ज्ञानोदय प्रकाषन, गोरखपुर **1998.**
7. माजिद हुसैनः कृषि भूगोल
8. जिला सांख्यिकीय पत्रिका जनपद अमरोहा, मौसम विभाग, समाचार पत्र, अन्य पत्रिकायें उत्तर प्रदेश से सम्बन्धित।